VOLUME-7, ISSUE-2, FEBRUARY-2018 • PRINT ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Hindi

सामान्य जन- जीवन में पर्यावरण का महत्त्व

डॉ श्रीमति मंजू ताम्रकार सहायक प्राध्यापक हिंदी शा. काव्योपाध्याय हीरालाल महाविद्यालय अभनपुर जिला रायपुर (छ.ग)

KEYWORDS :

भारतीय संस्कृति का विकास प्रकृति की गोद में , वनसंपदा से संपन्न तपोवनों एवं आश्रमों में हुआ, जहाँ भविष्य दृष्टा ऋषियों के मंत्रो से प्रतिदिन पर्यावरण की शुद्धि व शांति के लिए निरंतर स्वर गूँजते रहते थे | ओमद्यों शन्ति रन्तरिक्ष शांतिः पृथ्वी शान्ति राप शान्ति रो आकाश , पृथ्वी , जल , पौधे एवं जीव ही पर्यावरण का सृजन करते हैं , प्रकृति का यह समग्र रूप ही पर्यावरण के नाम से जाना जाता है | आनुवंशिकी एवं पर्यावरण के परिणाम हैं जीव जन्तु |

पर्यावरण हमारे शरीर , मन एवं स्वास्थ प्रभावित होते हैं|

भारत ने आज़ादी के पचास वर्षों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की हैं, जिन पर हम गर्व कर सकते हैं फिर भी आज अनेक क्षेत्र हैं , जिन पर खास ध्यान दिया जाना आवश्यक हैं | देश में गरीबी,अज्ञानता,स्वस्थ्य, रोजगार और बिगड़ते पर्यावरण की समस्या दूर करने के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है|

आज गावों की तुलना में शहरी विकास और विस्तार की गति तीव्र है | यही कारण है कि गाँवो से शहरों की ओर पलायन की प्रवृत्ति जारी है, जिसके फलस्वरूप शहरों में उपलब्ध बुनियादी सुविधाएं कम पड़ने लगी है ओर शहरी क्षेत्रों का पर्यावरण दूषित होने लगा है |

यह तो सर्वविदित है कि भारत प्राकृतिक ओर सांस्कृतिक विविधता वाला देश है देश की जनसंख्या के एक बड़े हिस्से का जीवन मूलतः स्थानीय प्रकृति ओर पर्यावरण पर निर्भर है | बदलते परिवेश में मनुष्य की स्वार्थपूर्ण नीति के फलस्वरूप जीव-जंतुओं, वनस्पतियों आदि की हजारों प्रजातियाँ हमेशा - हमेशा के लिए लुप्त होती जा रही हैं |

देश के ग्रामीण क्षेत्रों में पारिस्थितिक संतुलन बनाये रखने के लिए यदि सम्पोषित विकास की धारणा को विकसित करके प्रोत्साहित किया जाये तो धीरे-धीरे लोगो में पर्यावरण के प्रति लगाव पैदा होगा |

प्रदुषण नियंत्रण

आज बढ़ते शहरीकरण ओर औद्योगीकरण के फलस्वरूप वनों की कटाई जारी है | विश्व स्वास्थ संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार प्रतिवर्ष ४० लाख बच्चे खांसी , जुकाम ओर साँस रोग से पीड़ित होकर मौत का शिकार हो जाते हैं |

प्रदुषण के बढ़ते दुष्प्रभावों को रोकने के लिए जरुरी है - सूक्ष्म पर्यावरण को सुधारा जाये ताकि सांस जैसी बीमारियों को रोका जा सके | इसके लिए वट, तुलसी,आँवला, नीम, बेल और पीपल जैसे वृक्षों का अधिकाधिक वृक्षारोपण किया जाना चाहिए , जो भारतीय जलयायु में अधिकाधिक फूलते-फलते हैं| इस प्रकार के वृक्षों की आबोहवा परिस्थितिय संतुलन बनाये रखने में मददगार होगी|

पारिस्थितिक संकट और मानव का भविष्य -

मानव सभ्यता के विकास के समय से ही यह स्वीकार किया जाता है कि मानव ओर प्रकृति को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता | मानव का जीवन आश्रय प्राकृतिक व्यवस्था है यह प्राकृतिक व्यवस्थता पांच तत्वों में विभाजित है - वायु , जल , भूमि , जीव - जंतु ओर वनस्पतियाँ| हमारी विकासशील मानव सभ्यता एक ऐसी सभ्यता में बदल रही है जो मरुद्यानों के स्थान पर रेगिस्तानों को स्थापित कर रही है | परिणामस्वरुप पृथ्वी पर सभी जीवों के विनाश का भय पैदा हो रहा है|

पारिस्थितिक संकट के कारणों को मोटे तौर पर हम पांच वर्गों में बाँट सकते है -

1. तीव्र औद्योगिक विकास
2. तीव्र जनसंख्या
3. अधिक तकनीकी कारण
4. असीमित खनन
5. अनियोजित विकास

समस्याएं और समाधान -

भूतल पर अन्य जीवधारियों कि अपेक्षा मानव पर्यावरण का सबसे गतिशील कारक हैं यदि वह पर्यावरण में परिवर्तन कर सकता है तो अपनी बुद्धि और विवेक की क्षमता से उस पर नियंत्रण भी रख सकता है अतः आज जो पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हुई है , उनका समाधान ढूँढा जा सकता है लेकिन प्रश्न है - समस्या बोध का यदि नि.लि. तत्वों और समस्याओं का समाधान ढूंढने में सफलता मिलती है तो संभव है कि मानव का भविष्य उज्जवल होगा -

१. प्रकृति के साथ संवेदनशील सम्बन्धो का विकास किया जाना चाहिए अर्थात् प्रकृति को माँ के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए|
2. पर्यावरण के अनुरूप तकनीकों का विकास किया जाना चाहिए|
3. बढ़ती जनसंख्या पर यथासंभव नियंत्रण रखा जाना आवश्यक है|
4. नगरीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति पर अंकुश तथा गार्डन सिटी को प्रश्रय देना चाहिए|
5. भौतिकवादी जीवन पद्धति में सुधार लाना चाहिए|
6. वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का विस्तार किया जाना चाहिए जिससे मानवता के प्रति दायित्व में सुधार लिया जा सके|
7. संसाधनों की गुणवत्ता और भंडार के अनुरूप प्रयोग करना चाहिए अर्थात् संवर्धन और संरक्षण युक्त विदोहन की नीति होनी चाहिए|
8. प्रौद्योगिकी में सुधार लाना चाहिए ताकि प्रदुषण को कम किया जा सके इसके लिए अपशिष्टों की पुनर्चक्रण विधि को अपनाना चाहिए|
9. ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण और वैकल्पिक या (अपरंपरागत) का विकास इसके तहत जल, विद्युत और ऊर्जा, बायोगैस आदि साधनों को बढ़ावा देना चाहिए|